यीशु कौन है?

अध्यन एक

मसीहत से संबंधित मेरी सबसे पुरानी यादों में था, लगभग 9 वर्ष की आयु में स्कूल जाना। जैसे मैं सेलिब्रेशन आर्मी चर्च के पास से गुजरा, दीवार पर टंगे एक पोस्टर ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा। उस पर लिखा था, "क्या तुम सचमुच जीवित हो?" मैंने सोचा, जो मैंने अब तक पढ़ा था उसमें से यह अब तक का सबसे बेतुका कथन था। मैं जीवित हूं तभी तो मैं उस बेवकूफी भरी बात को पढ़ पा रहा हूं। इसके लिए कोई व्यवस्था नहीं थी और मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि मसीही लोग सबसे अधिक नसमझ लोग हो सकते हैं। निश्चित तौर पर, जब मैं स्वयं मसीही बना तो मैंने जाना कि जब कोई व्यक्ति मसीह के पास आता है तो वह एक अलग प्रकार के जीवन में प्रवेश करता है मसीह में एक नया जीवन, जहां एक व्यक्ति "सचमुच जीवित हो जाता है । ”

मसीहत के विरुद्ध मेरा पश्चताप पूर्ण रवैया मुझे बहुत सारे ‘नए युग’ की सामग्री और दूसरे धर्मों की खोज में से लेकर गया। अंत में जिसने मुझे मसीहत की ओर देखने के लिए विवश किया वह हैल लिन्से नामक लेखक द्वारा लिखी गई पुस्तक थी, जिसका नाम था, "The Late Great Planet Earth" (स्वर्गीय महान ग्रह पृथ्वी) उसने कई सारे प्रमाण दिए कि यीशु जीवित और अच्छा था और बहुत सारी बाइबल की भविष्यवाणियां जो उसके लौटने के विषय में लिखी गई हैं पूरी हुईं हैं और हो रहीं हैं। मुझे आपके बारे में नहीं पता लेकिन इससे पहले कि मैं अपना जीवन मसीह को देता, मुझे बहुत सारी जानकारी की आवश्यकता थी।

मेरे जीवन का क्या अर्थ है, इस खोज की शुरुआत मै गंभीरता से करने लगा। मैं इस बात पर विश्वास नहीं करता कि आप गणितज्ञ या वैज्ञानिक प्रमाण से मसीहत को साबित कर सकते हैं लेकिन इस बात के भारी प्रमाण है कि यदि इसे न्यायालय में पेश किया जाए तो कोई भी तर्क समझने वाला व्यक्ति प्रमाणों को तोल कर यह निर्णय दे देगा कि मसीहत सच्ची है। इस अध्ययन में मैं आपके विचारण के लिए मसीह के व्यक्तित्व के बारे में कुछ ऐतिहासिक प्रमाणों को जांचना चाहूंगा और यह कि वह कौन था?

सर्वप्रथम हम कैसे जानते हैं कि उसका अस्तित्व था?

मुझे बताया गया कि सम्यवादी रूसी शब्दकोश में यीशु को एक काल्पनिक जन के रूप में दिखाया गया है जिसका कभी अस्तित्व नहीं था। कोई भी गंभीर इतिहासकार आज इस विचारधारा को नहीं रख सकता। यीशु के अस्तित्व के बारे में बहुत सारे प्रमाण हैं। नए नियम से प्रमाण, बल्कि गैर मसीही लेखी से भी। उदाहरण के लिए, दोनों रोमी इतिहासकारी टैसीट्स (प्रत्यक्ष रूप से) और सुईटोनिअस (अप्रत्यक्ष रूप से) ने उनके विषय में लिखा है।

फिर से ३७ ईसवी में जन्मे यहूदी इतिहासकार फ्लाविअस जोसेफ (स्पष्टता: एक गैर मसीही) यीशु और उसके चेलों का इस प्रकार से वर्णन करते हैं:

अब इस समय के लगभग एक बुद्धिमान मनुष्य था, यीशु यदि उसे मनुष्य कहना नियोजित हो क्योंकि वह भले कामों का करने वाला था, ऐसे लोगों का शिक्षक जो सच/सत्य को आनंद के साथ ग्रहण करते हैं। उसने अपनी ओर दोनों को खींच लिया- बहुत से यहूदी और बहुत से अन्य जातियाँ। वह 'मसीही' था, और अब पिलातुस, ने हम में से मुख्य लोगों के सुझाव पर, उसे क्रूस पर दंडित किया, उसे जो उससे पहले प्रेम करते थे उन्होंने उसे छोड़ा नहीं, क्योंकि तीसरे दिन वह उन्हें फिर जीवित दिखाई दिया, जैसा की दिव्य भविष्यवक्ताओं ने यह सब और उससे संबंधित दस हजार और सुंदर बातें पहले ही बता दी थी, और मसीह जाति जो उसके नाम से बुलाई जाती है आज के समय में विलुप्त नहीं है।

1. हम कैसे जाने कि जो उन्होंने लिखा वह बदला नहीं गया? क्या नए नियम के लेख विश्वसनीय हैं?

शायद कुछ लोग कहेंगे कि नया नियम काफी समय पहले लिखा गया। हम कैसे जाने कि जो उन्होंने लिखा वह सालों में नहीं बदला? इसका उत्तर शाब्दिक आलोचना के विज्ञान में छिपा है। इसका अर्थ है कि जितनी लिखित सामग्री या मनुस्मृतियाँ हमारे पास हैं और जितने समय के निकट यह लिखी गई, उनके मूल होने में उतना ही कम संदेह रह जाता है। आइए हम नए नियम की तुलना, हमें दिए गए अन्य प्राचीन लेखों से करें। स्वर्गीय प्रोफेसर एफ.एफ. ब्रूस (जो कि यूनिवर्सिटी ऑफ मैनचेस्टर, इंग्लैंड में वचन पर टिप्पणी के रायलंइज प्रोफेसर थे) इस बात की ओर संकेत करते हैं कि सीजर्ज गैलिक वार के लिए हमारे पास नौ या दस प्रतियां हैं और उनमें से सबसे पुरानी कैसर के समय में लगभग नौ साल बाद लिखी गई। लुवीज रोमी इतिहास के लिए हमारे पास बीस से अधिक प्रतियाँ नहीं है जिसमें से सबसे पुरानी लगभग सौ ईसवी के आसपास आती है। जब हम नए नियम पर आते हैं तो हमारे पास बहुत सारी सामग्री है। नया नियम चालीस और सौ ईसवीं के बीच लिखा गया। हमारे पास संपूर्ण नए नियम के लिए सर्वोत्तम मनुस्मृतियाँ हैं जो तीन सौ ईसवी के आस-

पास से है (समय सीमा केवल तीन सौ साल) प्यरी पर लिखे नए नियम के अधिकांश लेख तीसरी शती से और यहुन्ना के सुसमाचार का हिस्सा भी जो लगभग एक सौ तीस ईसवी में लिखा है। गया लगभग पाँच हजार से अधिक यूनानी मनुस्मृतियाँ, दस हजार से ज्यादा लैटिन मनुस्मृतियां, और नौ हजार तीन सौ अन्य मनुस्मृतियाँ साथ ही छत्तीस हजार से अधिक हवाले प्राचीन कलीसिया के अगुवों के लेखों में।

कार्य	कब लिखी गई	प्राचीनतम प्रतियाँ	समय अवधी (वर्षो में)	प्रतियों की संख्या
हैरोडोस	488-428ई. पू.	900 ईसवी	1300	8
थ्यूसीडाईडस	0.460-400 ई० पू०	900 ईसवी	1300	8
टैसीट्स	100 ई० पू०	100 ई० पू०	1000	20
सीजर्स गैलिक युद्ध	58-50 ई० पू०	100 ई० पू०	150	9.10
लिवि का रोमी इतिहास	49 ई० पू०-17 ईसवी	900ईसवी	900	20
नया नियम	40-100 ईसवी	130 ईसवी	300 संपूर्ण मनुस्मृतियाँ	350ईसवी

5,000$यूनानी 10,000लातीन 9300अन्य

इस क्षेत्र में एक अग्रणी विद्वान सर फ्रेडरिक केनयम की बात को दोहराते हुए एफ० एफ० ब्रूस प्रमाण का सार देते हैं:

मूल लेखो और प्राचीनतम परमाणु के अस्तित्व में होने की तिथियों के बीच की अवधि बहुत कम या न के बराबर हो जाती है, और किसी भी संदेह के लिए आखिरी आधार का वचन हमारे पास अधिकांश वैसे ही पहुंचा जैसे लिखा गया, अब हट गया है। अतः यह मान लिया जाए कि नए नियम की पुस्तकें सच्ची और खरी है'

तो हम प्राचीनतम मनुस्मृति से जानते हैं कि वह था, पर वह कौन है?

मार्टिन सकोर्सिज, एक फिल्म निर्माता ने एक बार अपमानजनक फिल्म बनाई जिसका नाम था "English the Last Temptation of Christ" (मसीह की आखिरी परीक्षा)। जब उनसे फिल्म बनाने का कारण पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि वह यह दिखाना चाहते थे कि यीशु

सचमुच में एक इंसान था। फिर भी ज्यादातर लोगों के मन मे यह संदेह नहीं है। आज कुछ भी लोग संदेह करते हैं कि यीशु पुर्ण रूप से मानव था। उसके पास मानवीय शरीर था। कई बार मैं थका हुआ और भूखा होता था उसके पास माननीय भावनाएं थी। वह नाराज होता था, प्रेम करता था और वह शोकित भी होता था। उसके पास मानवीय अनुभव थे, उसकी परीक्षा ली गई, उसने सीखा, काम किया और उसने अपने माता- पिता की आज्ञा मानी। आज अधिकांश लोग यह कहते हैं कि यह यीशु केवल एक मनुष्य था- एक महान धर्मगुरु। बिलि कोनोली, एक हास्य कलाकार ने बहुत बड़ी बात की जब उसने कहा "मैं मसीहत में विश्वास नहीं कर सकता परंतु मैं यह समझता हूं कि यीशु एक बहुत अच्छा मनुष्य था।"

क्या प्रमाण है यह बताने के लिए कि यीशु एक बहुत अच्छा मनुष्य या एक धार्मिक गुरु से बढ़कर था? उत्तर यह है कि इस विचार से सहमत होने के लिए कि वह था और परमेश्वर का विशेष पुत्र है, त्रिएकता का दूसरा व्यक्ति, बहुत सारे प्रमाण हैं।

उसने अपने विषय में क्या कहा?
कुछ लोग कहते हैं, "यीशु ने कभी भी परमेश्वर होने का दावा नहीं किया"। वास्तव में यह सच है कि यीशु यह कहते हुए कि मैं परमेश्वर हूं यहां वहां नहीं फिरा। फिर भी यदि उस ओर देखा जाए जो सब उसने सिखाया और दावा किया तो संदेह नहीं है कि वह इस बात को जानता था कि वह एक मनुष्य था जिसकी पहचान परमेश्वर था।

1. स्वंय पर केंद्रित शिक्षा
यीशु के बारे में एक दिल लुभाने वाली बात यह है कि उसकी बहुत सारी शिक्षाएं स्वंय पर केंद्रित थी। वह अक्सर लोगों से कहता था, "यदि तुम परमेश्वर के साथ संबंध चाहते हो तो तुम मेरे पास आओ।" (देखें यहुन्ना १४:६ पृष्ठ १६२१) उसके साथ संबंध के द्वारा ही हम परमेश्वर से मिल पाते हैं। अपने जीवन के युवा सालों में मैं इस बात से जागृत था कि कोई चीज की कमी मेरे जीवन में है, यह इस प्रकार से था जैसे कि एक आंतरिक खालीपन था जो भरे जाने की चाह रखता था। शायद आप सुबह के आंतरिक खालीपन से परिचय होंगे जिसकी भरपाई आप वस्तुओं से करना चाहते हैं। बीसवीं शताब्दी के अग्रणी मनोवैज्ञानिकों द्वारा इस अंदरूनी खालीपन को स्वीकार किया गया है। उन सब से इस बात को पहचाना है कि हम सब ने सबके हृदय में एक गहरा खालीपन, एक खोया हुआ भाग, बहुत बड़ी भूख है।
फ्रेउड ने कहा, " लोग प्रेम के भूखे हैं।"
जंग ने कहा, "लोग सुरक्षा के भूखे हैं।"

एडलर ने कहा, "लोग महत्वता के भूखे हैं।"
यीशु ने कहा, "मैं जीवन की रोटी हूँ।" यदि तुम अपनी भूख की तृप्ति चाहते हो तो मेरे पास आओ। यदि अंधकार में चल रहे हो तो वह कहता है "मैं जगत की ज्योति हूं।"

एक किशोर के रूप मै मृत्यु से बहुत डरता था शायद उस जोखिम भरे काम के कारण जो मैं कर रहा था। मैं इंग्लैंड से पूर्वी तट पर एक व्यावसायिक मछुआरे की तरह काम कर रहा था। कई बार मैंने अपने जालों में विस्फोटक गोले पकड़े और मुझे उनका सामना करना पड़ा था और मैं उन्हें जहाज के फ़र्श पर लुडकता हुआ पाता था। एक प्रश्न हमेशा मेरे सामने रहता था- यदि मैं मर गया तो किधर जाऊंगा? यदि तुम मृत्यु से भयभीत हो, यीशु कहता है, "पुनरुत्थान और जीवन में ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तो भी जीएगा। और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनंत काल तक न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास करती है? (यहुन्ना ११:२५-२६) यीशु की शिक्षा स्वयं पर केंद्रित होने से मेरा यही अभिप्राय है। जीवन में खाली हिस्से की ओर उसने अपने आपको उत्तर के रूप में दर्शाया है।

कुछ लोग विभिन्न चीजों की तल में होते हैं- नशा, शराब, शारीरिक संबंध। यीशु ने कहा "यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करें तो तुम सचमुच स्वतंत्र हो जाओगे"। (यहुन्ना ८:३६) बहुत से लोग चिंता, घबराहट, भय और दोष से दबे हुए हैं। "यीशु ने कहा, हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" (मती ११:२८) उसने कहा, "मार्ग, सत्य और जीवन में ही हूं।"

उसने कहा कि उसे प्राप्त करना परमेश्वर को प्राप्त करना है (मत्ती १०-४०) उसका स्वागत करना परमेश्वर का स्वागत करना है। (मरकुस ९:३७) और उसको देख लेना परमेश्वर को देख लेना है। (यहुन्ना १४:९)

एक बार एक बालक ने एक चित्र बनाया और उसकी मां ने उससे पूछा कि वह क्या कर रहा है? बच्चे ने कहा, "मैंने परमेश्वर की तस्वीर बना रहा हूं।" मैंने कहा, "मूर्ख मत बनो। तुम परमेश्वर की तस्वीर नहीं बना सकते। कोई नहीं जानता कि ईश्वर कैसा दिखाई देता है। बच्चे ने उत्तर दिया, हां जब तक मैं समाप्त करूंगा, वे जान जाएंगे। वास्तव में यीशु ने कहा, "यदि तुम यह जानना चाहते हो कि परमेश्वर कैसा दिखाई देता है तो मेरी ओर देखो।"

2. अप्रत्यक्ष दावे
यीशु ने काफी सारी बातें कहीं, जो कि, यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर होने का दावा नहीं

करती लेकिन यह दिखाती है कि वह अपने आप को परमेश्वर के जैसे स्थान में सोचता था जैसे कि हम एक या दो उदाहरणों में देखेंगे। अपनी बाइबल में निकालें (मरकुस २:३-१२)।

पाप क्षमा करने का अधिकार

3.और लोग एक झोले के मारे हुए को चार मनुष्यों से उठवाकर उसके पास ले आए। 4.परंतु जब वे भीड़ के कारण उसके निकट न पहुंच सके, तो उन्होंने उस छत को जिसके नीचे वह था, खोल दिया और जब उसे उधेड़ चुके, तो उस खाट को जिस पर झोले का मारा हुआ पड़ा था, लटका दिया। 5.यीशु ने, उसका विश्वास देखकर, उस झोले के मारे हुए से कहा है, हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए। 6.तब कई एक शास्त्री जो वहां बैठे थे, अपने-अपने मन में विचार करने लगे। 7.कि यह मनुष्य क्यों ऐसा कहता है? यह तो परमेश्वर की निंदा करता है, परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है? 8.यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया, कि वे अपने-अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं, और उसने कहा, तुम अपने-अपने मन में यह विचार क्यों कर रहे हो? 9.सहज क्या है? क्या झोले के मारे से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना, कि उठ अपनी खाट उठा कर चल फिर? 10.परन्तु जिससे तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है (उसने उस झोले के मारे हुए से कहा)। 11.मैं तुझसे कहता हूं उठ अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा। 12.और वह उठा, और तुरंत खाट उठाकर और सबके सामने से निकल कर चला गया, इस पर सब चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, कि हमने ऐसा कभी नहीं देखा। (मरकुस २:३-१२)

पाप क्षमा करने का दावा सचमुच चौंकाने वाला दावा है।
अपनी पुस्तक मेयर क्रिश्चियनिटी' में सी० एस० लुईस इसको अच्छे से समझाते हैं जब वह लिखते हैं,

"दावे का एक हिस्सा हम इसलिए देख भी नहीं पाते हैं क्योंकि हमने उसे अक्सर सुना है, और हम उसके महत्व को समझ ही नहीं पाते। मेरा अर्थ है पाप क्षमा करने का दावा: हर तरह के पाप। अब यदि बोलने वाला ईश्वर न हो तो यह बेहद मजाकिया होगा। हम सब समझ सकते हैं कि किसी प्रकार मनुष्य अपने प्रति की गई गलतियों को क्षमा करता है। तुम मेरे पैर पर चढ़ो और मैं तुम्हें क्षमा कर दूँ, तुम मेरे पैसे चुराओ और मैं तुम्हें क्षमा कर दूँ। पर हम उस मनुष्य का क्या करें जो स्वंय लूटा गया और स्वंय कुचला गया न हो जिसने इस बात की घोषणा की कि उसने तुम्हें दूसरे मनुष्य के पैर पर चढ़ने के लिए और दूसरे मनुष्य के पैसे चुराने के लिए क्षमा किया है। उसके आचरण के उदार रूप में अर्थहीन बेवकूफी

बताया जा सकता है। फिर भी, यीशु ने ऐसा किया। उसने लोगों को बताया कि उनके पाप क्षमा हुए और कभी भी उन लोगों से सलाह लेने के लिए नहीं ठहरा जिन्हें उनके पापों ने निसंदेह चोट पहुंचाइ थी। वह बिना हिचकिचाहट ऐसा जताता था जैसे कि वही वह व्यक्ति है, जिसने मुख्यता हर गलियों में चोट खाई है। यह बात तभी मायने रखती है यदि वह सचमुच ईश्वर था जिसके नियम तोड़े गए थे, और जिसका प्रेम हर पाप में से घायल हुआ। किसी और बोलने वाले के मुंह से जो ईश्वर नहीं है। इन शब्दों से यह समझ आता है कि यह मूर्खता और घमंड है जिसकी प्रतिस्पर्धा किसी और पात्र से नहीं की जा सकती।

संसार का न्याय होने का दवा

एक और असाधारण सा अप्रत्यक्ष दावा यह है कि एक दिन वह संसार का न्याय करेगा। (मती २५:३१-३२) उसने कहा वह लौटेगा और स्वर्गीय महिमा में अपने सिंहासन पर बैठेगा (पद ३१) सारी जातियां/राष्ट्र उसके सम्मुख होंगे। वह उसका न्याय करेगा। कुछ लोग अनंत जीवन और वह मीरास प्राप्त करेंगे जो सृष्टि की उत्पत्ति से उनके लिए तैयार की गई है लेकिन और लोग उससे अनंत काल के लिए अलग होने का दंड भोगेगें।

3. प्रत्यक्ष दावे

"मसीही" होने का उसका प्रत्यक्ष दावा (यहुन्ना २०:२६-२९)

26.आठ दिन के बाद उसने चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उसके साथ था, और द्वार बंद थे, तब यीशु ने आकर और बीच में खड़ा होकर कहा, तुम्हें शांति मिले। 27.तब उसने थोमा से कहा, अपनी उंगली यहां लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लगाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वास ही नहीं परंतु विश्वासी हो। 28.यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु हे मेरे परमेश्वर। 29.यीशु ने उस से कहा, तूने तो मुझे देखकर विश्वास किया है, धन्य वे हैं जिन्होंने ने बिना देखे विश्वास किया। (यहुन्ना २९:२६-२९)।

यीशु ने यह नहीं कहा, अरे जरा ठहरो। तुम बहुत आगे निकल गए हो। उसने असल में यह कहा, तुम समझने में थोड़ा कम थे। उसने कहा शक करना छोड़ो और विश्वास करो। (पद २७)

परमेश्वर के पुत्र होने का उसका प्रत्यक्ष दावा

61.परंतु वह मौन साधे रहा, और कुछ उत्तर न दिया, महायाजक ने उससे फिर पूछा, क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीही है? 62.यीशु ने कहा, हां मैं हूं और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों के साथ आते देखोगे। 63.तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा अब हमें गवाहों का और क्या प्रयोजन है। 64.तुमने यह निन्दा सुनी: तुम्हारी क्या राय है? उन सब ने कहा, वह वध के योग्य हैं।

(मरकुस १४:६१-६४)
यदि आपके पास केवल एक अफसर हो कि आप लोगों को वचन का एक भाग दिखा सकें जहां पर यीशु द्वारा परमेश्वर होने का प्रत्यक्ष दावा हो तो वह है (यहुन्ना १०:३०-३३)।
30. मैं और पिता एक हैं। 31. यहूदियों ने उसे पत्थरवाह करने को फिर पत्थर उठाए। 32. इस पर यीशु ने उनसे कहा, कि मैंने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाएं हैं, उनमें से किस काम के लिए तुम मुझे पत्थरवाह करते हो? 33.यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि भले काम के लिए हम तुझे पत्थरवाह नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की निंदा के कारण और इसलिए कि तू मनुष्य होकर अपने आपको परमेश्वर बनाता है। (यहुन्ना १०:३०-३३)
इस तरह के दावों को परखा जाना चाहिए। विभिन्न प्रकार के लोग विभिन्न तरह के दावे करते हैं। केवल यह तथ्य की कोई मनुष्य कोई जन होने का दावा करता है से यह तात्पर्य नहीं कि वह दावा सच्चा है। कुछ लोग भ्रमित हो जाते हैं यह सोच कर कि वह नेपोलियन पोप या मसीह विरोधी हैं। हम लोगों के दावों को कैसे जांच सकते हैं? यीशु ने दावा किया कि वह परमेश्वर का विशेष पुत्र है परमेश्वर की देह में। हमारे पास तीन तार्किक संभावनाएं हैं। पहली संभावना यह है कि यदि दावे झूठे थे तो वह जानता था कि वे झूठे थे जिस दिशा में वह एक धोखेबाज और दुष्ट है। या वह सचमुच जानता था जिस दशा में वह भ्रमित था। वास्तव में, वह पागल था। यह दूसरी संभावना है। तीसरी संभावना यह है कि वह दावे सच्चे थे।
सी० एस० लुईस इसको इस तरह से बताते हैं:
'एक मनुष्य जो केवल एक मनुष्य था और उस तरह से बातें करता जैसे यीशु करता था वह एक महान नैतिक शिक्षक नहीं हो सकता था। या तो वह बावला होगा, एक ऐसे व्यक्ति के समान जो सरफिरा है, या फिर वह नरक का शैतान होगा। आपको चुनाव करना है। या तो यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था और है या फिर एक पागल, या उससे बत्तर- लेकिन हम एक कृपालु की तरह उसके महान शिक्षक होने का किसी प्रकार के मूर्खतापूर्ण विचार को न रखें। उसने वह हम पर नहीं छोड़ा। उसका ऐसा कोई इरादा नहीं था।'
जो उसने कहा उसको साबित करने के लिए क्या प्रमाण है?
1.उसकी शिक्षा - किसी भी जन के मुँह से निकली शिक्षाओं में से यीशु की शिक्षा को महानतम शिक्षा के रूप में बड़े पैमाने पर स्वीकार किया गया है। "अपने पड़ोसी से अपने सामान प्रेम रख" "जैसा तुम चाहते हो कि तुम्हारे साथ किया जाए वैसा ही तुम दूसरों के साथ किया करो" "अपने शत्रुओं से प्यार करो" 8.दूसरा गाल फेर दो"। (मती ५:७)
थियोलॉजी के अमेरिकी प्रोफेसर बर्नाड रम ने यीशु की शिक्षाओं के बारे में यह कहा, "उन्हे ज्यादा पढ़ा जाता है, दोहराया जाता है, प्रेम किया जाता है, विश्वास किया जाता है और

अनुवादित किया जाता है क्योंकि वह संसार में कहे जाने वाले महानतम वचन है, उनकी महानता है निर्दोष स्पष्ट आत्मीयता, उन महान समस्याओं का स्पष्टता, सहमति और पूर्ण विश्वास, जो मानव में यीशु के शब्दों जैसा आकर्षण नहीं है क्योंकि जिस प्रकार से यीशु ने आधारभूत मानवीय प्रश्नों का उत्तर दिया उस प्रकार से कोई और मनुष्य नहीं दे सकता। वे उस प्रकार के शब्द और उत्तर है जिसकी अपेक्षा हम परमेश्वर से कर करते हैं।'

क्या वास्तव में एक धोखेबाज या पागल ऐसी शिक्षा दे सकता है?
2.उसके काम - कुछ लोग कहते हैं कि मसीहत नीरस है। यीशु के आस-पास होने से यह नीरस नहीं होगी। जब वह एक पार्टी में गया उसने बहुत सारे पानी को दाखरस में बदल दिया 45 ईसवी पूर्व (दाखरस 1869 की तीन बोतलों को हाल ही में सोथबी द्वारा हांगकांग की नीलामी में बेचा गया। एक बोतल पर सबसे ऊंचा दाम 232.692 था)।
उस बारे में क्या जब वह एक शोक सभा में गया? पत्थर को हटाओ। लार्जर की पट्टियां खोल दो। यीशु के साथ पिकनिक पर जाने के बारे में क्या जबकि जो कुछ उनके पास था वह केवल पांच रोटी और दो मछली थी?
यीशु के साथ अस्पताल जाने के विषय में क्या जबकि वहां एक आदमी पढ़ा हुआ था जो ३६ वर्षों से बीमार था। उसने उसको उठने के लिए बोला। उसने उसे पूरी रीति से चंगा किया। उसकी मृत्यु के विषय में क्या - अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे देना।
3.इसका चरित्र: बर्नाड लेविन ने येशु के विषय में यह लिखा- "नए नियम के शब्दों में, क्या मसीह का स्वभाव काफी नहीं है किसी का प्राण भेधने में, यदि किसी में प्राण हैं जो कि भेधे जाएं?..... वह अब भी संसार पर छाया हुआ है, उसका संदेश अब भी स्पष्ट है, उसकी दया अब भी अपार, उसकी सन्तावना अब भी असरदार, उसके शब्द अब भी महिमा, बुद्धिमत्ता और प्रेम से भरे हुए हैं।" लॉर्ड हैलशाम, द लॉर्ड चांसलर अपनी आत्मकथा 'वह द्वार जिसमें मैने प्रवेश किया' (The Door Where in I Went) में यीशु के चरित्र का वर्णन करते हैं कि कैसे उनके पास जीवंत रीति से आया जब मैं कॉलेज में थे:
"सर्वप्रथम हमें उसके विषय में यह जान लेना चाहिए कि उसके हमारे साथ होने से हमें मंत्रमुग्ध हो जाना चाहिए। एक मानव रूप में यीशु बेहद आकर्षक था। जो उन्होने क्रूस पर चढ़ाया वह एक युवा जन था, स्फूर्ति और जीवन से भरा हुआ और आनंद की बात यह है कि जीवन देने वाला प्रभु और उस से बढ़कर हंसी का प्रभु,
कोई जन बेहद आकर्षक कि लोग केवल मजे के लिए उसके पीछे चले आते थे। बीसवीं सदी को चाहिए कि वह फिर से महिमा मय और आनंद से भरे मनुष्य को थाम कर रखें जिसकी केवल उपस्थिति ही उसके साथियों को प्रसन्नता से भर देती थी। वह कोई साधारण सा गलीली नहीं था बल्कि हैमिल्न का एक सच्चा पाईड पाईपर था जिसके आसपास बच्चे

हंसते हुए घूम रहे होते थे और आनंद और खुशी से चिल्ला रहे होते जब वह उन्हे उठाता।'
4. प्रमाण का चौथा भाग है उसके द्वारा पुराने नियम की भविष्यवाणी का पूरा होना।
थेलॉजिकल विषयों के अमेरिकी लेखक विलबर स्मिथ ने कहा:
भविष्य का पता लगाने के लिए प्राचीन दुनिया के पास विभिन्न तरीके थे, जिसको दिव्यता कहते हैं, लेकिन यूनानी और लातीन साहित्य की पूरी श्रेणी में एक बड़ी ऐतिहासिक घटना की जो निकट भविष्य में होने वाली है हमें कोई वास्तविक विशिष्ट भविष्यवाणी नहीं मिलती। हालांकि उन्होंने भविष्यवक्ता और भविष्यवाणी शब्दों का प्रयोग किया। न मानव जाति में सैकड़ों वर्ष पूर्व बोली गई भविष्यवाणियों की ओर स्लाम संकेत कर सकता, न ही इस देश में किसी भी धार्मिक समूह के संस्थापक उचित रीति से किसी प्राचीन लेख को निश्चित रूप से, पहले से उनके विषय में बताते हुए पहचान सकते हैं।'
फिर भी यीशु के संदर्भ में उसने अपने विषय में लिखी 300 साल से अधिक भविष्यवाणियाँ पूरी की जिसमें से 29 एक ही दिन में पूरी हुई- जिस दिन वह मरा। उसमें से बहुत सी उसके द्वारा नियंत्रित नहीं की जा सकती थी। शायद कुछ लोग कहेंगे कि वह अपने आप उन्हें पूरा करने निकला। पर आप कैसे बैतलहम में अपने जन्म का स्थान तय करते हैं? उसके जन्म स्थान के विषय में सैकड़ों वर्ष पूर्व लिखा गया था। उस बारे में क्या कि वह कहां दफनाया जाएगा? उस भविष्यवाणी के विषय में क्या कि जब वह क्रूस पर लटका होगा तो रोमी सिपाही उसके वस्त्र के लिए चिट्ठी डालेंगे?
5. प्रमाण का पांचवा भाग है उसका पुनरुत्थान -
उसका कब्र में न होना - कुछ लोग कहते हैं कि मरा नहीं। वह क्रूस पर केवल बेहोश हुआ और बाद में कब्र में जाग उठा। आइए हम उस बात में एक क्षण सोचें। पहले हमें बताया गया कि उसके शरीर में लहू और पानी आया जिसे अब हम जानते हैं थक्के और सीरम का अलग होना जो किसी भी न्यायालय में मृत्यु के लिए चिकित्सकीय प्रमाण है।
31. और इसलिए कि वह तैयारी का दिन था, यहूदियों ने पीलातुस से विनती की कि उनकी टांगे तोड़ दी जाए और उतारे जाएं ताकि सब्त के दिन वह क्रूसो पर न रहें, क्योकिं वह सब्त का दिन बड़ा दिन था। 32. सो सिपाहियों ने आकर पहले की टाँगे तब दूसरे की भी, जो उसके साथ क्रूसो पर चढाए गए थे। 33.परंतु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है तो उसकी टांगें न तोड़ी। 34. परंतु सिपाहियों में से एक ने बर्छे से उसका पंजर भेदा और उसमें से तुरंत लहू और पानी निकला। (यहुन्ना १९:३१-34)।
क्या हम सचमुच विश्वास कर सकते हैं कि यीशु ने उन रोमी सिपाहियों को धोखा दिया जिनके हाथों में उसका जीवन था यदि वे किसी को भाग निकलने देते? यह तो बल्कि उनका जीवन था। उनकी पसली में भाला भेदा गया कि यदि वह अब भी जीवित है तो पता चल जाए। यीशु को कोड़े मारे गए और उसे बुरी तरह पीटा गया। उसके पास अपना क्रूस

उठाने की ताकत नहीं बची थी। अपने सिर में कांटों की चोट के कारण वह खून से लथ-पथ लटका पड़ा था और फिर वह भाला उसकी पसली में। हां, हम इस बात को जानते हैं कि कुछ घंटों पहले पतरस ने आग के पास उसके हाथ गर्म किए थे, इसलिए हमें पता है कि उस दिन सच में ठंड थी। क्या हम विश्वास कर सकते हैं कि उसने कब्र में ठंड की परवाह नहीं की, कब्र के मुंह पर रखा बड़ा भारी पत्थर हटाया, संघर्ष किया और फिर सिपाहियों को घूस दी और भाग गया?

उस बारे में क्या जब पतरस और यहुन्ना कब्र पर दौड़े- उन्होंने क्या देखा जिसने उन्हें विश्वास करने पर मजबूर किया?

3.तब पतरस और वह दूसरा चेला निकलकर कब्र की ओर चलें। 4.और दोनों साथ दौड़ रहे थे, परंतु दूसरा चेला पतरस से आगे बढ़कर कब्र पर पहले पहुंचा। 5. और झुक कर कपड़े देखें, तो वह भी वह भीतर न गया। 6.तब शमौन पतरस उसके पीछे-पीछे पहुंचा और कब्र के भीतर गया और कपड़े पड़े देखें। 7.और वह अंगोछा जो उसके सिर से बंधा हुआ था, कपड़ों के साथ पढ़ा हुआ नहीं परंतु अलग एक जगह लपेटा हुआ देखा। 8.तक दूसरा चेला भी जो कब्र पर पहले पहुंचा था, भीतर गया और देख कर विश्वास किया। 9.वे तो अब तक पवित्र शास्त्र की वह बात न समझते थे, कि उसे मरे हुए में से जी उठना होगा। (यहुन्ना २०:3-९)।

कुछ लोग मानते हैं कि शिष्यों ने शव को चुराया था। आइए उस बारे में सोचें। अपने स्वामी की मृत्यु पर चेले बहुत भ्रमित थे। क्या हम सचमुच यकीन कर सकते हैं कि तीन दिन के बाद वह उन पहरेदारों के सामने से जो कब्र पर पहरा दे रहे थे शव चुराने की कोशिश करेंगे? वे ऐसा क्यों करेंगे? क्या पतरस केवल एक झूट के लिए पेन्तकुस्त के दिन उठकर 3000 से अधिक लोगों को प्रचार कर सकता था? उनमें से बहुतों ने जिस पर विश्वास किया उसके लिए अपना जीवन दे दिया।

शायद अधिकारियों ने शव को ले लिया था? यह बहुत असंभव है क्योंकि जब चेलों ने प्रचार करना शुरू किया कि यीशु मरे हुए में से जी उठा है तो वे शव को ऐसे ही उत्पन्न कर सकते थे।

पुनरुत्थान के लिए प्रमाण का दूसरा हिस्सा उसका चेलों को दिखाई देना है- क्या वह सब भ्रम में थे? थोमा बिल्कुल निश्चित था जब यीशु ने अपने आप को उनके सम्मुख जीवित प्रस्तुत किया। पुनरुत्थान के बाद यीशु अलग-अलग चेलों को 10 से अधिक बार अलग-अलग जगह दिखाई दिया, फिर दूसरे अवसर पर एक ही समय में 500 से अधिक लोगों। (लुका २४:३६-४३) दो बार हम पढ़ते हैं कि उसने उसके साथ भोजन किया। यदि यीशु आत्मा था तो अपने चेलों के सामने कैसे खा सकता था? (यहुन्ना २१:१२-१५, लूका २४:४२-४४)।

5. शीघ्र परिणाम - पिछले 2000 वर्षों में करोड़ों लोगों का बदला हुआ जीवन बहुत प्रचलित और ज्ञानी कार्यों के लेखक माइकल ग्रीन ने कहा: "कलीसिया जिसकी शुरुआत कुछ अशिक्षित मछुआरों और कर वसूलने वालों से हुई थी अगले 300 साल में पूरे संसार में फैल गई। यह शांतिपूर्ण क्रांति की बिल्कुल सिद्ध अद्भुत कहानी है जिसकी संसार के इतिहास में कोई समानता नहीं है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि पूछने वालों से मसीह लोग यह कह पाए, "यीशु तुम्हारे लिए केवल मरा ही नहीं, वह जीवित है। तुम उससे मिल सकते हो और जिस सच्चाई के विषय में हम बात कर रहे हैं उसका अपने आप पता लगा सकते हो।" उन्होंने किया और कलीसिया से जुड़े और वह कलीसिया जो उस ईस्टर की कब्र से उत्पन्न हुई हर जगह फैल गई।

मसीही अनुभव

सीoएसo लुईस इसका निष्कर्ष इस प्रकार देते हैं-

"फिर हमारा सामना एक भयभीत करने वाले उपाय से हुआ। जिस मनुष्य के बारे में हम बात कर रहे हैं, जैसा उसने कहा था वह था (और है) या फिर एक सिरफिरा या कुछ उससे भी बद्तर। अब मुझे बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देता है कि न तो वह सिरफिरा था न दुष्ट जन और परिणाम स्वरूप चाहे वह कितना अजीब, डरावना या असंभव क्यों न लगे मुझे इस नजरिए से अपनाना है कि वह परमेश्वर था और है। परमेश्वर ने शत्रुओं द्वारा क्ब्जाए संसार में मानव रूप में कदम रखा है।"

क्या अभी तक आपको विश्वास हुआ? शायद यह आपका समय है इस बारे में कुछ करने का। जिस परमेश्वर की बात हम कर रहे हैं वह आप के विषय में सब कुछ जानता है और अनंत प्रेम से प्यार करता है। (यिर्मयाह ३१:३) उसने सामान्य से हटकर कार्य किया- अपने पुत्र प्रभु यीशु के रूप में आया उन पापों का दाम चुकाने के लिए जिसके लायक आप और मैं थे, पृथ्वी पर अपने पापी जीवन के कारण। बाईबल बताती है कि जो कोई प्रभु का नाम लेगा वह बचाया जाएगा। (रोमियों १०:१३) यदि आप सच्चाई से उस ईश्वर की ओर मुढ़ेंगे जिसने आपको रचा, पापों से फिरेंगे और अपने पापों की क्षमा के लिए प्रभु यीशु मसीह को आमंत्रित करेंगे, तो बाइबल कहती है कि आप बचाए जाएंगे। वर्तमान समय से बेहतर और कोई समय नहीं है।

शायद आप यह प्रार्थना करना चाहेंगे.....

पिता, आज मैं दीनता से अपने पास आता हूं उस महान प्रेम को जानते हुए जो प्रभु यीशु मसीह को दुनिया में लेकर आया कि मेरे बदले पाप का दाम चुकाए। हालांकि जो मृत्यु उसने सही वह उसके योग्य नहीं था, मैं जानता हूं कि यह उसने मेरे लिए किया। मेरा स्थान

लेकर मेरे बदले क्रूस पर मरा। मैं अपने पापी जीवन से फिर कर तेरे पास आता हूं। मेरे पास क्षमा कर और मेरे जीवन में आ। मै इसी क्षण से तेरे लिए जीना चाहता हूं। मसीह में जीवन का जो मुफ्त दान तू मुझे देता है, उसके लिए मैं तेरे धन्यवाद करता हूं। आमीन।

मैं आपको उत्साहित करना चाहूंगा कि, इसके बाद आने वाले अध्ययन को भी पढ़ें जिसका नाम है, 'यीशु क्यों मरा?'

इस अध्ययन के बहुत सारे विचार निक्की गमबेल द्वारा अल्फा कोर्स से हैं।

मैं किंग्सवे पब्लिशर द्वारा छपी उनकी पुस्तक Question Of Life (जीवन के प्रश्न) को भी पढ़ने का सुझाव देना चाहूंगा।